रिकॉर्ड :– ये कौन आज आया सवेरे–2, कि दिल चौंक उठ्ठा सवेरे–2.....
ओमशांति! बच्चों ने क्या सुना? भक्ति का गीत। वो भक्ति के गीत, भक्ति जिसको अंग्रेजी में फिलॉसाफी कहते हैं। देखो, उनको टाइटिल्स मिलते हैं– डॉक्टर ऑफ फिलॉसाफी। ठीक है ना बच्चे! अभी फिलॉसाफी मनुष्य सभी जानते हैं, छोटे–बड़े। कोई से भी ये पूछो कि ईश्वर कहाँ रहते हैं? मनुष्य, मनुष्य से पूछते हैं ना! भई, सर्वव्यापी है। ये भी फिलॉसाफी यानी भक्तिमार्ग। ये सब भक्तिमार्ग के अर्थ। अभी भक्तिमार्ग की कोई भी बात बाप नहीं सुने, कोई भी शास्त्र की बात बाप नहीं सुने; क्योंकि ये तो सारा भक्तिमार्ग है ना। इसमें जो कुछ भी मनुष्य ये गीत गाते हैं, शास्त्र पढ़ते हैं, विद्वान हैं, वो सभी हैं भगत और एक है भगवान। अभी कोई भी भगत को ज्ञान सागर तो कहेंगे नहीं, न उनमें कोई ज्ञान है, न कोई ज्ञान सागर के बच्चे हैं, कोई भी; क्योंकि ज्ञान सागर को तो कोई जानते नहीं हैं। न कोई अपन को उस ज्ञान सागर के बच्चे कहते हैं, प्रैक्टिकल में सो भी और तुम (...); क्योंकि अभी है प्लेजेंट (Pleasant–सुखद) बात कि तुम भक्ति को नहीं मानते हो अर्थात् ये जो फिलॉसाफी है भक्ति की सब मनुष्यों के पास (...)। अच्छा, भक्ति से क्या फिलॉसाफी बताएँगे शास्त्र कि भगवान सो(से) कैसे मिलें। अभी वो तो मनुष्य कहते हैं कि भगवान से कैसे मिलें और भगत जानते नहीं भगवान को, फिर फायदा क्या! बैठ करके अनेक प्रकार के शास्त्र सुनाएँगे, फलाना करेंगे, गीत गाएँगे, ये करेंगे, बहुत–2 धमचक्कर मचाएँगे। फिलॉसाफी के टाइटिल्स तो सबको हैं, बहुत–बहुतों को होते हैं। बड़े–2 आदमियों को डॉक्टर ऑफ फिलॉसाफी कह देते हैं। यूँ तो एक ही बात मनुष्य की बुद्धि में है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। बस, वही उनकी पहले नम्बर की फिलॉसाफी, जिससे वो गिरते हैं, जिस फिलॉसाफी को धर्मग्लानि कहते हैं; क्योंकि पहले–2 एक ही अक्षर है जो गिराते हैं। फिर उनकी बहुत ही प्रस्ताव हैं– ये वेद,शास्त्र। अभी ईश्वर सर्वव्यापी है उसके लिए भी बहुत ये समझा देते हैं, बहुत वो शास्त्र निकाल कर बैठते हैं। तो वो तो मनुष्यों का ज्ञान है ना बच्ची। तुम मनुष्य से कोई ज्ञान सुनने वाले नहीं हो। कोई कहे कि हमारी सुनो, हमारे से बातचीत करो ये ज्ञान के ऊपर, तो उनसे हम कर नहीं सकते हैं; क्योंकि हम मनुष्य के पढ़े हुए नहीं हैं। दूसरे जो भी मनुष्य हैं, मनुष्यों से पढ़े हुए हैं। ये वेद,शास्त्र,ग्रंथ वगैरह–2 जो कुछ भी हैं, ये मनुष्य मनुष्यों से पढ़े हुए हैं और फिर क्या पढ़े हुए हैं, वो अभी मनुष्यों ने बनाए हुए हैं। जो भी वेद,शास्त्र,ग्रंथ, देखो ये भागवत,गीता फलाना–टीरा ये व्यास ने बनाया। वेद किसने बनाया? वेद व्यास ने बनाया। अभी वो तो मनुष्य ही ठहरा ना। बनाने वाले मनुष्य ही ठहरे। किताब–पुस्तक वगैरह मनुष्यों ने, कोई भगवान तो नहीं बैठ करके बनाते हैं। नहीं, ये सभी मनुष्यों के बनाय हुए हैं। ग्रंथ किसने बनाया? मनुष्यों ने बनाया। अच्छा, कह देते हैं गुरुनानक का ग्रंथ है। मनुष्य था ना। सब जिसको देहधारी हैं, वो तो मनुष्य ही ठहरा ना और देहधारी मनुष्य ही ये किताब बनाएँगे, देहधारी मनुष्य ही ये भक्ति सब करेंगे ना और भक्ति सिखलाएँगे। देखो, बच्चे होते हैं बड़े, देखो कृष्ण की पूजा करो, ऐसे कहेंगे। जैसे खुद करते रहते हैं, बच्चों को भी ये सुनाएँगे। चलो, फलानी करो। वो फिर कहेंगे, नहीं, ये महाराष्ट्रीयन कहेंगे– नहीं, गणेश की पूजा करो। तो एक ये हुई उनकी फिलॉसाफी, भक्ति। ये सब भक्ति। इसको ज्ञान नहीं कहा जाएगा बिल्कुल ही। .... ये गाया हुआ है– ज्ञान, भक्ति। तो ज्ञान से दिन ब्रह्मा का, भक्ति से रात। तो रात माना भक्ति। अभी रात तो अच्छी नहीं। तो जो मनुष्य किसको भी सुनाएँगे कोई बात, तो उनको रात का धक्का खाने का बनाएँगे, वो और तो कुछ भी नहीं बनाएँगे। तो उसका नाम ही अलग है बिल्कुल। उसको कहा ही जाता है–फिलॉसाफी। डॉक्टर ऑफ फिलॉ(साफी), टाइटिल देते हैं ना बच्ची। तुम(को) तो कोई डॉक्टर का नहीं मिलते हैं।

...तुमको तो सुनाने वाला है रूहानी बाप। बस, वो एक ही बार, एक ही दफ़ा रूहानी बाप आ करके समझाते हैं। ये भक्तिमार्ग में तो बहुत ही समझाते हैं, ढेर गुरु समझाते हैं, जन्म–जन्मांतर समझाते आते हैं। अभी वो तो हमें समझाते, समझते–2 हम गर्क हो गए, तमोप्रधान बन गए। अभी कोई मनुष्य थोड़े ही कोई सीखता है। मनुष्यों से कुछ भी नहीं सीखना है। समझा ना बच्चे! किससे सुनना है अभी? अभी स्प्रिचुअल फादर से सुनना है, रूहानी बाप से सुनना है। अभी सिर्फ एक रूहानी बाप से सुनना है और सुनने वाले फिर रूहानी बच्चे, आत्माएँ। वो सब मनुष्य, मनुष्यों को सुनाते हैं। समझा ना! वो मनुष्यों का ज्ञान है; ये है रूहानी बाप का ज्ञान। तुमको कोई मनुष्य, ये थोड़े ही तुमको सुनाते हैं। तुम्हारे से कोई पूछे, ये तभी कौन बैठते हैं? बोलें– हम रूह हैं। रूहानी बाप है, इसमें बैठ करके, हम रूह हैं, हम सुनते हैं उनका। यहाँ कोई मनुष्य की बात नहीं, मनुष्य, मनुष्य को समझाने की बात नहीं है। अभी परमात्मा जो रूह है, हमको समझाते हैं। हम रूह फिर इस शरीर द्वारा औरों को समझाते हैं। उसको कहा ही जाता है–रूहानी नॉलेज। ज्ञान उसको कहा जाता है। वो सब है भक्ति। इसमें बाप पहले ही आकर समझाते– तुम अपन को मनुष्य नहीं समझो। समझा ना! तुम अपन को भगत नहीं समझो; तुम अपन को आत्मा समझो और मुझे अपना बाप समझो; क्योंकि तुम हैं ही भाई–2 आपस में कहलाने वाले। तो अपन को आत्मा ही सब समझो; क्योंकि गाया भी हुआ है कि आत्माएँ और परमात्मा अलग रहे बहुकाल। फिर कहते हैं कि सुन्दर मेला कर दिया जब वो सद्गुरू रूहानी बाप मिले फिर रूहानी बच्चों को। यहाँ कोई की भी बच्चों को सुनने की है नहीं। कभी कोई कहे कि हम सवाल पूछते हैं, हमारे से डिबेट करो शास्त्र...। बोलो, पर हम किसकी बात सुनते ही नहीं हैं। हमारा शास्त्रों का ज्ञान है ही नहीं। हम उसको फिलॉसाफी कहते हैं...भक्तिमार्ग का। फिलॉसाफी का अर्थ ही है–भक्तिमार्ग। तो ये भक्तिमार्ग का ज्ञान है और ...सद्गति मार्ग का ज्ञान तो एक कहा जाता है ना। सर्व की सद्गति दाता, ज्ञान सागर एक राम। तो बाकी भला तभी क्या है? बाकी सभी है दुर्गति के लिए ये ज्ञान मनुष्यों का। जब ये सद्गति के लिए रूहानी बाप आते हैं तब सद्गति हो जाती है, स्वर्ग बन जाता है। मनुष्य, मनुष्य को जो कुछ बैठ करके नॉलेज देते हैं ज्ञान की (...); क्योंकि सतयुग में तो समझा, सतयुग में तो कोई भक्ति भी नहीं है, न कोई ज्ञान है। ठीक है ना! न भक्ति है तो न ज्ञान है। वहाँ बात भी नहीं है। भक्ति तो होती नहीं। मंदिर–वंदिर हैं नहीं। ज्ञान की दरकार नहीं है; क्योंकि बच्चों को समझाया गया है कि वहाँ सद्गति है। बाप अभी तुम बच्चों को, रूहानी बाप (...)। तो हमेशा कहाँ भी कोई आवे; क्योंकि बच्चे हरेक अपने–2 उन्नति वाले हैं। कोई–न–कोई से बात करने लग पड़ते हैं; परन्तु बाबा कहते हैं– तुम कोई से बात भी न करो। मनुष्य जो कुछ कहेंगे वो हियर नो ईविल। है ना! वो जो भी कुछ समझाएँगे, ये भक्ति दुर्गति के अक्षर निकालेंगे। इसलिए भक्ति दुर्गति के तो अक्षर तुम बहुत सुने। सुनते–3 तुम्हारी दुर्गति हो गई है। इसलिए इस सीढ़ी में भी लिखा है– भक्ति माना दुर्गति मार्ग शुरू। तो बस, जो मनुष्य कुछ भी ज्ञान की बातें कहेंगे, वो दुर्गति को प्राप्त कराएँगे; क्योंकि वो सभी है शास्त्र का ज्ञान। बाबा है। बाप कहता है– मैं हूँ अथॉरिटी। समझा ना! ये सभी ज्ञान की अथॉरिटी एक मैं हूँ, ज्ञान का सागर एक मैं हूँ। वो अथॉरिटी हैं शास्त्रों (की)। वो सभी है भक्तिमार्ग। मैं कोई शास्त्र सुनाता हूँ तुम बच्चों को? शास्त्रों में तो बहुत कहानियाँ हैं, कितनी! मैं कोई तुमको कहानियाँ सुनाता हूँ, कुछ भी? ये राम की ... चुराई गई, कृष्ण का सर्प ने डंसा। अथाह बातें करते हैं। मैं कोई ये बात तुमको थोड़े ही समझाता हूँ। नहीं, मैं तुम बच्चों को बैठ करके, जो कोई भी मनुष्य मनुष्य को नहीं समझाय सकते हैं, सो मैं तुमको समझाता हूँ। उसको कहा ही जाता है ... रूहानी नॉलेज, ज्ञान। वो .... सब हैं

जिस्मानी। तो जिस्मानी को कहेंगे– फिलॉसाफी। ये ज्ञान की बातें हैं ना। भक्ति और ज्ञान की बातें हैं। धंधे–धोरी की बातें नहीं हैं ना। कोई भी सतसंग में जाते हैं, कोई धंधे–धोरी की बात होती है क्या? तो यहाँ कोई धंधे–धोरी की बात थोड़े ही होती है। नहीं। फर्क बताते हैं कि वो जो हैं सतसंग, वो सभी हैं भक्तिमार्ग के लिए। मनुष्य, मनुष्य को शिक्षा देते हैं। यहाँ बाप आ करके, परमपिता परमात्मा रूहानी बाप आकर रूहानी बच्चों को बताते हैं। इसलिए जो बच्चों को तकलीफ होती है यही कि हम आत्मा हैं और परमात्मा बाप का बच्चा है, बाप से हम वर्सा ले रहे हैं। भला ये सारा जो भी समय है, सतयुग से ले करके यहाँ तक, सब बरोबर वो सभी समझेंगे कि हम इन बाप से वर्सा ले रहे हैं। भले वहाँ ज्ञान है; पर तुम बच्चे जो होंगे बाप के, वो तो बाप की गद्दी की(के) वारिस होंगे ना। बाप से वर्सा ... लेते हैं ना। वहाँ भी तो ज़िस्म हुआ ना। लक्ष्मी–नारायण को भी तो ज़िस्म हैं ना। राधे–कृष्ण बच्चों को भी तो ज़िस्म हैं ना। वो जिस्मानी बाप और माँ से वर्सा लेंगे। वो भी तो जिस्मानी बात हो गई ना। यहाँ वो बात ही नहीं। वो जिस्मानी राजा–रानी से वर्सा लेते हैं। जिस्मानी मनुष्य मनुष्य से, धंधे वाले हैं, कोई भी हैं, उनसे वर्सा लेते। तुम यहाँ वर्सा लेते ही हो, अपन को आत्मा समझ करके परमात्मा से वर्सा लेते हो। ये बात ही बिल्कुल न्यारी। सतयुग में भी तो ऐसे होगा ना बच्ची। इनका भी तो बच्चा होगा ना। ये देखो, ये कोई इनका बच्चा नहीं है, ये राधे और कृष्ण, ये जो स्वयंवर के बाद बने हैं। कृष्ण अलग है और वो राधे अलग है। राधे लक्ष्मी बनती है। सो अलग घर की। वो अलग घर की(का) है; परन्तु ये तो समझना है कि हम इस बाप से, जब छोटे हैं, तो बोलेंगे– बाप से वर्सा लेंगे। अभी भी देखो ये सब बच्चे बैठे हैं, जो राजाएँ–रानी हैं। ये हमारा फादर हैं, इनसे हम वर्सा लेंगे। तो जिस्मानी हुआ ना। अच्छा, यहाँ क्या है? यहाँ हम आत्मा हैं और हम बेहद के बाप से वर्सा लेते हैं। ये बात हो गई है बिल्कुल ही न्यारी। एक ही बार होती है ये बात। भले वहाँ जो तुमको वर्सा मिलता है, यहाँ के पुरुषार्थ का मिलता है; परन्तु मिलता कहाँ से है? वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे कि हमको रूहानी बाप से वर्सा मिलते हैं। नहीं, बस ये एक ही समय है, जबकि आत्माओं को परमात्मा से वर्सा मिलता है। आत्माओं को परमात्मा को याद करना है। कोई भी देहधारी को(की) यादें तोड़नी हैं। ये फट नहीं होंगी। जल्दी नहीं किसकी होती है। बस, मैं आत्मा हूँ– ये याद की यात्रा। देखो 'योग–4', बड़ा नामी–ग्रामी है योग, भारत का प्राचीन योग। योग..माना ही है याद, किसके साथ योग रखना। जैसे आशिक है, माशूक के साथ भई योग है उनका बुद्धि का; परन्तु हम उसको कहेंगे तो याद ना। देखो, कैसे उनकी कितनी याद में रहते हैं। स्त्री पति की याद में कैसे रहती है। पर 'याद' का अक्षर वो संस्कृत में या हिन्दी में है– योग। नहीं तो 'याद' अक्षर हिन्दुस्तानी अक्षर है। हिन्दी अक्षर है पक्का। तो अभी तुमको नॉलेज कौन देते हैं, कौन तुम्हारे से बात करते हैं? मनुष्य नहीं बात करते हैं। सतयुग से ले करके कलहयुग के अंत तक मनुष्य मनुष्य में बात करते हैं। सिर्फ इस समय में आ करके रूहानी बाप रूहानी बच्चों से बात करते हैं। फिर जो कुछ भी तुम समझाते हो, सो भी यह तुम जानते हो कि हम रूह हैं, इन ऑरगन्स द्वारा हम इनको समझाते हैं। तो वो भी तुम जानते हो कि रूह उनका समझता है। इसके लिए इसका नाम ही रखा हुआ है–रूहानी स्प्रिचुअल नॉलेज। तो स्प्रिचुअल नॉलेज ये झूठी भी होती है यहाँ। यह जो है नॉलेज गीता की, ... इनको भी वही लोग स्प्रिचुअल नॉलेज कह देते हैं। इनमें कोई वो लोग फर्क नहीं डालते हैं। उनको मालूम नहीं है रूहानी नॉलेज का। क्यों? कि गीता का भी नॉलेज जिस्मानी कृष्ण ने दिया है, दिखलाया है। तो अभी वो तो कोई रूहानी नॉलेज नहीं हुई ना, बच्ची। वो भी तो मनुष्य, भले दैवी गुण मनुष्य; परन्तु बाप तो कहते हैं– मनुष्य कोई भी होवे, वो

ब्रह्मा,विष्णु,शंकर देवताएँ, तो भी उनके पास ये स्प्रिचुअल नॉलेज, जिसको कहा जाता है रूहानी नॉलेज, सिवाय एक .... बस, और कोई के पास है नहीं। इसलिए तुम्हारे से कभी भी कोई डिबेट करते, कुछ वार्ता वगैरह, बोलो– ये जो भक्तिमार्ग का ज्ञान है, वो है मनुष्यों का बनाया हुआ ज्ञान। इसको भक्ति या फिलॉसाफी कहते हैं। इसको कोई ज्ञान नहीं कहा जाता है। ज्ञान सिर्फ एक है ज्ञान सागर, उस ज्ञान को ज्ञान, रूहानी ज्ञान कहा जाता है, नॉलेज कहा जाता है कुछ, पर रूहानी। वो भगवान देते हैं नॉलेज। वो भगवान खुद कहते हैं– भगवानुवाच्य। श्रीमत भगवत गीता में भगवानुवाच्य है। तो भगवानुवाच, उन्होंने ठोंक दिया जिस्मानी भगवान को, कृष्ण को(का) नाम डाल करके और यहाँ है रूहानी। तो देखो, किसको भी पता नहीं पड़ता है एकदम। अभी और तो कोई शास्त्र है नहीं, जिसमें कोई भगवानुवाच, जिससे समझा ... कौन–सा भगवानुवाच्य। शिव भगवानुवाच तो है गीता में और एक ही शास्त्र सर्वशास्त्रमयी शिरोमणि गीता, एक ही है। बस, और कोई शास्त्र है ही नहीं; क्योंकि इसी शास्त्र से ही तो आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना किया जाता और ये है सतयुग के धर्म की स्थापना। अभी सतयुग के धर्म की स्थापना सिवाय बाप के और तो कोई नहीं समझा सकेंगे। सतयुग की स्थापना तो कोई मनुष्य तो करेंगे नहीं। सतयुग की स्थापना तो गाई जाती है– हैविनली गॉड फादर। अभी कौन–सा फादर– कृष्ण? क्राइस्ट? नहीं, फादर तो फिर भी उनको कहा जाएगा। तो बच्ची ये थोड़ी जो है नॉलेज और समझ, इसमें समझदार बहुत चाहिए। वो मोटी बुद्धि वाले या ये सभी, ये बड़ा मुश्किल समझते हैं। इसलिए कभी भी कोई मनुष्य बैठ करके बात करें, बोलो– ... ये जो भी शास्त्र वगैरह हैं, वो तो मनुष्यों ने बनाए हुए हैं ना, कोई भगवान ने तो नहीं बनाए हैं ना। भगवान तो निराकार है ना। 'व्यास' तुम कहेंगे, वो भी तो मनुष्य ठहरा ना। उनका तो चित्र दिखलाते हैं। व्यास बैठा है, सुनाते हैं और दूसरा बैठ करके सुनते हैं। एक चित्र भी दिखलाते। ...नाम पड़ा हुआ है ना–व्यास। बस, व्यास नाम तो कोई मनुष्य का है ना, आत्मा का तो नाम नहीं है ना। आत्मा को शरीर मिलता है, उनका नाम है। बस, एक आत्मा है सिर्फ, जिसका नाम शिव रखा हुआ है। वो है ही निराकार। वो निराकार का ही नाम रख दिया। है आत्मा, परम आत्मा। देखो, कहा जाता है ना– परम आत्मा। परमधाम में परम माना सुप्रीम आत्मा। आत्माएँ तो तुम भी हो, कोई नहीं थोड़े ही (...), पर आत्माओं का भी तो बाप होगा ना। तो ज़रूर उनको ही कहेंगे–सुप्रीम बाबा और गाते भी हैं सब ... 'बाबा'। देखो, पूजा भी होती है निराकार की। तो वो एक ही निराकार की पूजा होती है ना। वो तो एक ही बाप हुआ ना। और तो कोई निराकार होता ही नहीं है ना। अगर और भी निराकारों की पूजा होती होंगी, तो निराकार की बच्चों की पूजा होती होंगी। होती है ना बरोबर– रुद्र शिव, फिर उनके भी बच्चों की होती है। तो उनके बच्चों की पूजा होती है। नहीं तो निराकार आत्माएँ तो साढ़े पाँच सौ करोड़ हैं। है किसकी ताकत, जो बैठ करके परमात्मा लिंग की और सभी इतनी की बैठ करके रुद्रों की करेंगे। है तो उनकी पूजा हो नहीं सकती है वास्तव में। वहाँ तो वो मिट्टी बना करके बनाते हैं सब। अभी समझते हो कि कभी ये क्या है, ये किसकी पूजा होती है? रुद्र ज्ञान मटीरियल यज्ञ। तो देखो, वो सभी मटीरियल यज्ञ हैं ना। मटीरियल यानी मिट्टी बनाय करके और फिर उनके वो चित्र बना करके, तो ये सभी मटीरियल पूजा है ना। मिट्टी के सब खिलौने बना करके उनकी पूजा करते हैं। ठिक्कर की, भित्तर की, जिसकी चाहो उसकी बनाते हैं, मिट्टी कहो, पत्थर कहो, वगैरह। तो इसको कहा ही जाता है–मटीरियल पूजा। सभी मटीरियल को याद करते हैं। देखो, ये मटीरियल है ना। अभी इस जड़ को तो तुम याद नहीं करते हो ना। तुम तो जो चैतन है, उनको जानते हैं; इसलिए तुम इनको

पूजा नहीं करते हो। तुम अभी मिट्टी की पूजा नहीं करते हो। इनकी अभी कोई पूजा होने की दरकार नहीं है। भक्तिमार्ग में तो है। भक्तिमार्ग में हुई है सो तुमने देखा कि भक्तिमार्ग में सबकी पूजा होती है, सब पूजा करते हैं। अभी लक्ष्मी–नारायण (...) में भी जभी कोई संन्यासी भी जाते हैं ना बच्ची, तो भी वो भी जाकर मत्था टेकेंगे ज़रूर। मत्था न टेकेंगे, तो क्या, क्यों जाते हैं लक्ष्मी–नारायण के मंदिर में? क्या चित्र देखने के लिए? ना। तो सभी मटीरियल है ना बच्ची। देखो, ये भी मटीरियल है ना– गंगा का स्नान। ....तो वो है, सभी मिट्टी से बनते हैं। तो इसको मटीरियल कहा जाता है और बाप तो है ही रूहानी बाप। वो तो अविनाशी चीज़ है। उस सिवाय जो भी चीज़ देखने में आती हैं, वो विनाशी हैं। ...देखो, ये सब जो कुछ भी देखने में आते हैं, सिवाय आत्मा के, वही सिर्फ अमर है, बाकी सब खतम हो जाते हैं। तो देखो, आत्मा तो इम्मटीरियल हुआ ना। ... उनको जब मिट्टी से बनते हैं तभी कहते हैं अभी आत्माओं को ये मटीरियल शरीर मिला। जिसको फिर कहा जाता है– आत्मा को जीव मिला। ये जीव काहे का है? मटीरियल। तो आत्मा तो सबमें होती है ना बच्ची। अभी वो जनावरों में भी आत्मा होती है। आत्मा बिगर तो कोई ..... कहेगा, मर गया। मनुष्य मरा उसमें से आत्मा निकल गई; परन्तु उनका तो कोई हिसाब है नहीं। ये हिसाब जो कुछ भी है, ... मनुष्य 84 लाख योनियों का बैठ करके हिसाब करे तो वो लग जावे उनको ये इतना बड़ा कल्प। यहाँ तो कभी भी तुम कोई से भी बात भी नहीं कर सकते हो। बोलो– हम कोई भी, तुम जो ज्ञान सुनाते हो, चाहते हो हमारे से बात करने, वो तो शास्त्र का ज्ञान है ना। हम मनुष्यों ने शास्त्र बनाए हैं ना, कोई निराकार तो आ करके शास्त्र नहीं बनाया ना। ...बनाया हुआ शास्त्र, वो ज्ञान हम सुनने नहीं चाहते हैं। हम ज्ञान किससे सुनते हैं? जो ज्ञान का सागर, वो तो निराकार है। वो एक ही दफ़ा आ करके ज्ञान सुना करके सद्गति दे देते हैं। हम उनसे सुनते हैं। हम कोई भी ये शास्त्र वगैरह, हम बरोबर जानते हैं, वेद,ग्रंथ,उपनिषद जानते हैं कि ये भक्तिमार्ग की सभी बातें हैं, अभी हम ये बातें नहीं सुनते हैं। हम अभी (...), जो पतित–पावन है। देखो जब तुम कहते हो–पतित–पावन, किसको याद करते हो? तो याद तो भगवान को करते हो ना, बाप को करते हो ना। तो वो बाप तो रूहानी बाप है। आत्मा याद करती है उनको। हे भगवन! ये किसने कहा? ये आत्मा ने कहा– हे भगवन, हे भगवान। भगवान तो ऊपर में ठहरा ना। क्यों हुआ ऊपर में? कि हम आत्माएँ ऊपर में रहती हैं, बाबा भी ऊपर में रहते हैं; इसलिए हम (उन)को– हे भगवन। अच्छा, भगवान का नाम क्या है? आत्मा तो एक जैसी हो जाती है, कैसे मालूम पड़ेगा? नहीं, ये भगवान का मालूम पड़ता है तब जबकि वो ज्ञान का सागर आ करके ज्ञान सुनाते हैं, आ करके सद्गति देते हैं। तभी तो भगवान कहते हैं ना उनको और कहते भी हैं– परम आत्मा। फिर कह देते हैं– परमात्मा। तो परमात्मा, तो परम आत्मा, परे–ते–परे बड़ी हुई। वो तो बरोबर बाप हो गया ना, सब आत्माओं का बाप और फिर दूसरी बात कि सभी आत्माएँ, फिर कहते भी हो सभी ब्रदर्स हैं यानी आत्माएँ सभी भाई–2 हैं; क्योंकि वो तो अमर हैं ना। ये तो कोई अमर शरीर तो नहीं है ना। वो तो हैं ही हैं। वो आत्माएँ भाई–2, ब्रदर्स हैं ही हैं। सभी ब्रदर्स को पार्ट मिला हुआ है...बजाने का, जो फिर सिस्टर्स भी बनती हैं तो ब्रदर्स भी बनते हैं। नहीं तो वास्तव में हैं सभी आत्माएँ एक बाप के बच्चे। तो जबकि आत्माएँ सभी बाप के बच्चे हैं, तो आत्माएँ जब शरीर धारण करती हैं, तो ये क्या है कि स्वर्ग में सुख और नरक में दुख। ये क्यों हुआ है! हैं हम सभी ब्रदर्स, फिर ये क्यों हुआ है कि हम ब्रदर्स को, जब शरीर लेते हैं तो स्वर्ग में सुख है और फिर हम ब्रदर्स को यहाँ बड़े दुःख होते–2 हैं। ये क्यों होता है, क्या है, ये प्रश्न उठता है। तो फिर उनको ये समझाया जाता है कि वो तो ज्ञान है और फिर वो है भक्ति। वो है दिन; वो

है रात। ये बना हुआ है। वो है सुख; वो है दुःख। ये खेल है एक। ऐसे नहीं कि भगवान कोई सृष्टि रचते हैं तो कोई दुःख रचते हैं। नहीं। भगवान जब ..., बाप जब आते हैं, तब आ करके (...)। बुलाते ही हैं बाप को जबकि मनुष्य दुःखी होते हैं। कि सुख और दुख का खेल तो है ना। तो भगवान आ करके, एक भगवान आ करके सुख देते हैं। जब सुख का समय पूरा होते हैं तो फिर रावण के कारण, 5 विकारों के कारण फिर दुःख ही शुरू हो जाते हैं। ये दुख और सुख का तुम खेल समझाती हो। ये किसने समझाया है? ये बाबा ने समझाया। इसको ही कहा जाता है–रूहानी ज्ञान। वो सब जो कोई भी मनुष्य बोलेंगे, उसको कहेंगे– जिस्मानी ज्ञान। बोलें, तुम्हारा जिस्मानी ज्ञान हम सुनने नहीं चाहते हैं, हम इसमें बातचीत नहीं करने चाहते; क्योंकि हमको हुकुम है कि सिर्फ मेरे से ही सुनो। सुनना है तो मेरे से ही सुनो। मैं तुम मनुष्यों की क्यों सुनें? हम जानते हैं कि तुमको कोई रूहानी ज्ञान थोड़े ही मिला है, रूहानी ज्ञान तो हमको मिलता है; क्योंकि बाप देते हैं हमको। शिवबाबा हमको ज्ञान देते हैं। उसको कहा जाता है–स्प्रिचुअल नॉलेज। तुम्हारा है फिलॉसाफी। हम हैं डॉक्टर ऑफ स्प्रिचुअल नॉलेज; तुम हैं डॉक्टर ऑफ भक्ति। समझा ना! डॉक्टर भी एक/दो को कहते हैं ना, सभी सर्जन (...)। तो हम रूहानी सर्जन के बच्चे हैं; तुम सभी जिस्मानी फिलॉसाफी के बच्चे हो। तो फर्क है बच्ची, ये तुम्हारे ज्ञान में और उनके ज्ञान में। इससे(इसलिए) उनसे बात करने से टाइम फालतू होता है एकदम; क्योंकि वो अपने भक्तिमार्ग की टा–4 करेंगे और हम उनको कहेंगे कि ये सब भक्तिमार्ग की बातें अभी हम नहीं सुनते हैं। बाबा ने कहा है– हियर नो ईविल यानी भक्ति जिससे दुर्गति होती है, जो मनुष्य सुनाते हैं, उनसे न सुनो। तो तुम जो हमको सुनाएँगे सो शास्त्र की वाणी सुनाएँगे। हम जो सुनाते हैं, हमको भगवान आ करके सुनाते हैं, हम वो सुनाते हैं। रात–दिन का फर्क है। अभी हम भगवान की सुनें या मनुष्यों की सुनें? इसलिए हम मनुष्यों की कोई भी (...), सब जो भी बैठे हैं, ये सभी जो भी संन्यासी वगैरह, जो बड़े विद्वान–आचार्य पढ़ते हैं, वो तो शास्त्र पढ़े हुए हैं ना, वो तो हम भी पढ़े हैं। ऐसे नहीं कि हम नहीं पढ़े हैं। देखो है ना, भगवान आ करके कहते हैं– हे बच्चा! तुमने बहुत ही वेद,शास्त्र,ग्रंथ पढ़े हैं, बहुत ही गुरु किए हुए हैं; परन्तु इन सबको भूलो। अब मैं जो तुमको सुनाता हूँ वो सुनो। ये किसने कहा? भगवानुवाच्य। है तो सही ना भगवान। अभी भगवान कौन? तुम लोग ने नाम लिख दिया है कृष्ण का, जो 84 जन्म भोगते हैं और भगवान तो है रूहानी एक सबका बाप। सभी ब्रदर्स का .... बाप, जिसको ही परमपिता परमात्मा (...) और नाम भी रखा हुआ है–शिव। पीछे कोई शिव भी कहते हैं, कोई रुद्र ..., भाषाएँ हैं बहुत। नाम रख दिया। सुनें! जो हमको बैठ करके अपना भी परिचय देते हैं और सारी दुनिया के आदि–मध्य–अंत का परिचय देते हैं, अभी हम उनसे सुनेंगे। हम तुम्हारे से क्यों सुनें? इसलिए उनका सुनना ही नहीं है बिल्कुल ही। तुमको अगर सुनना है हमारी तो आकर सुनो और नहीं तो चले जाओ। हम रूहानी नॉलेज सुनाते हैं। हमको जो मँगाते हैं, उनको पहले से ही कहते– ये रूहानी नॉलेज, सुनना हो तो सुनो, हमको बुलाओ, न सुनना है तो हमको नहीं बुलाओ। हम सुनाते हैं। अच्छा लगता है तो मँगाओ। नहीं अच्छा लगता है तो नहीं मँगाओ। उसमें कोई भी मूँझने की कोई दरकार नहीं है कि तुमको समझाया जाता है, दुनिया में सब हैं जिस्मानी नॉलेज। सिर्फ तुम बच्चों में है। बिल्कुल देखो कितने थोड़े हो! ये तो बात सुनो। एक फ्रिक्शन(फ्रैक्शन–अंश) भी नहीं हो, इतनी–2 (...)। जैसे कहा जाता, शरीर की फ्रिक्शन किसको कहा जाता है? वो ये नाखून का भी ये ज़रा। इतना भी तुम्हारा वो सम्प्रदाय नहीं है, जितनी सारी दुनिया में है। तुम क्या हो? तुम तो अभी थोड़े ही थोड़े, बिल्कुल थोड़े हो, तो तुम्हारी कौन सुनेगा? जाओ–2, ढेर एकदम बड़े–2

विद्वान–आचार्य–पंडित, तो उनके पास जा करके सुनना नहीं है। हम सुनाएँगे। सुनना है, वो पसंद आवे तो सुनो, नहीं तो (...)। तो फिर उसमें क्या सुनाना है, जभी कोई बुलाते भी हैं। तो बोलो– हम सुनते हैं, ये बाप से, पतित–पावन से। वो सिर्फ बाप है सबका। हम ब्रदर्स हैं सभी। सभी आत्माएँ ब्रदर्स हैं। उनका वो है बाप। वो है ज्ञान का सागर और पतित–पावन। वो सिर्फ इशारा ही थोड़ा देते हैं। वो बोलते हैं– देखो ये अभी दुनिया ... कहो, उसमें भी पहले नम्बर में दुनिया भारत था, तो सतोप्रधान था। अभी सतोप्रधान दुनिया में सतोप्रधान भारत ही था। अब ये सतोप्रधान दुनिया सो तमोप्रधान बनी है। उसमें अनेक ... दूसरे भी धर्म आए हुए हैं और भारत ... दूसरे भी आए हैं। तो भारत भी तमोप्रधान हो गया। बाबा कहते हैं कि ये दुनिया जड़जड़ीभूत अवस्था को पाई है या ये कल्पवृक्ष वैराइटी धर्मों का जड़जड़ीभूत अवस्था को पाया है अर्थात् तमोप्रधान बना है। अभी शिवबाबा हमको कहते हैं, एक ही बात, सबसे ऊँचे–ते–ऊँची– एक तो अपन को आत्मा समझो। समझा ना! आत्मा समझ करके मुझ अपने बाप को याद करो, तो तुम्हारे ऊपर जो पाप का बोझा है, इस योगाग्नि से या इस याद की यात्रा से वो जलकर भस्म हो करके, तुम पवित्र बन जाएँगे और जो–2 भी फिर पवित्र बनेंगे, सो अपना पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। जो न बनेंगे, हिसाब–किताब चुक्तू कर वापस जाएँगे। हम आए ही हैं इस दुनिया को बदल करने, दुनिया को बदल करने के लिए। पुरानी दुनिया बदल तो होनी ही है ज़रूर; क्योंकि सतयुग के पास(बाद) त्रेता ज़रूर आना है, त्रेता के बाद द्वापर ज़रूर होना है, द्वापर के पास(बाद) कलहयुग ज़रूर होना है, कलहयुग के बाद फिर सतयुग ज़रूर आना है। कलहयुग और सतयुग के बीच में ... फर्क हुआ। सतयुग है पवित्र दुनिया; कलहयुग है अपवित्र दुनिया, पतित दुनिया। तो देखो, कलहयुगी याद करते हैं कि आ करके पतित (...) पावन दुनिया बनाओ। सो मैं आया हूँ पावन बनाने। पावन बनाने की एक ही रम्ज़(युक्ति) है– मामेकम् याद करो। तो तुम्हारा सभी विकर्म विनाश होगा और ये भी जो तुम्हारा अंतिम जन्म है, जबकि दुनिया बदल रही है, मैं आया हूँ पतित से पावन बनाने। तो दुनिया बदल रही है। कलहयुग से सतयुग होने का है। ये आसुरी सम्प्रदाय से, रावण राज्य खलास हो रामराज्य स्थापन होते हैं। तो फिर तुमको रामराज्य में पवित्रता चाहिए। तो पवित्रता तुमको अभी धारण करनी है। इसलिए कहता हूँ कि गृहस्थ–व्यवहार में ये अंतिम जन्म मृत्युलोक का रहना है कमल फूल के समान। समझा ना! ... तुमको कमल फूल के समान। अरे, वो तो देवता हैं ना। तुमको कहता हूँ कि कमल फूल के समान पवित्र रह करके (...)। रहना यहाँ है ना। इसलिए कहते हैं कि ये अंतिम जन्म इस विषय सागर में रहते हुए तुम कमल फूल के समान रहो; क्योंकि ये विषय सागर है ना। तो विषय सागर में कमल फूल के समान माना ही पवित्र हो करके रहो। रहते हुए पवित्र होते रहो। ये ज्ञान कोई सतयुग में तो दरकार नहीं है ना। वहाँ तो कोई विषय सागर तो है नहीं। ये विषय सागर है। ऐसे बोलते हैं पवित्र कमल फूल के समान, जैसे कमल का फूल पानी में रहते हुए, देखो ऊपर रहते हैं ना, उनको पानी टच नहीं करता है। कमल शोभा पाते हैं देखो और बच्चा भी पैदा करते हैं। भई है ना, कमल फूल, उनमें वो ... होती है, उनमें बच्चे पैदा होते हैं। तो तुम ऐसे पवित्र रहो। ये जन्म पवित्र रह करके मामेकम् याद करो, तो तुम्हारा जो पाप हैं, सभी भस्म हो जाएँगे और फिर तुम पावन हो जाएँगे। जब तुम पावन बन जाएँगे, यहाँ पावन दुनिया स्थापन हो जाएगी, ये जो देवी–देवताओं का राज्य है, वो यहाँ (...)। हम बादशाही स्थापन करने आए हैं। हम कोई सिर्फ धर्म नहीं स्थापन करने आते हैं, जैसे दूसरे आते हैं। हम तो दुनिया को बदलने आए हुए हैं, पतित दुनिया को पावन बनाने। और तो कोई मैसेन्जर आ करके पतित दुनिया को पावन तो नहीं बनाते हैं ना।

नहीं, वो तो आ करके धर्म (...)। वो उसके बाद पीछे वो आते हैं। पहले पावन रहते हैं और पीछे पतित हो जाते हैं। वो तो कोई सद्गति तो नहीं देते हैं ना, गुरु तो नहीं हैं ना। कोई भी गुरु नहीं हैं। ये तो ऐसे ही उनको कह देते हैं–प्रीसेप्टर। नहीं तो प्रीसेप्टर का अक्षर ही गुरु है; पर गुरु तो कोई है नहीं ना। गुरु एक है सिर्फ। सद्गति दाता एक गुरु है। बाकी तो कोई दुर्गति दाता भी तो नहीं है। ऐसे भी नहीं कहेंगे वो दुर्गति दाता है; क्योंकि पहले–2 मनुष्य जो आते हैं, वो पवित्र ही रहते हैं। उनको गुरुओं की कोई दरकार नहीं रहती है। गुरु तो करते हैं जबकि, सद्गति में जाने के लिए गुरु किया जाता है। तो अभी आधाकल्प होवे, जभी पाप भरे, उसके पीछे गुरु करेगा ना। तो देखो, आधाकल्प के बाद फिर तुमको गुरु करना पड़ा है। तो ये राज़ तो बाप बैठ करके समझाते हैं। तुमको कौन समझाते हैं? बाबा ने कहा, वो सभी है भक्ति। फिर भक्ति को कितने भी वो नाम देवें। ज्ञान नाम सिर्फ एक का ही, ज्ञान सागर से। उसको कहा ही जाता है बच्चे– रूहानी ज्ञान। बोलो, वो बाबा हमको ज्ञान... , हम मनुष्य का ज्ञान (...)। हम तुम्हारे से बात–चीत कर नहीं सकते हैं...। तुम कहते हो ना– शास्त्रार्थ करो। वेद में यह लिखा है। हम बोलते– वेद मनुष्यों ने लिखा हुआ है ना। हम मनुष्य की (...) जो कि हम बहुत ही पढ़े हैं, हम कहते हैं– जन्म–जन्मांतर पढ़े हैं, भक्ति की है; परन्तु अभी हमको ज्ञान मिल रहा है; क्योंकि भक्ति के बाद फिर ज्ञान मिलता है, भक्ति का फल। तो हमको अभी फल मिल रहा है। किससे? भगवान से। वो कोई भक्ति थोड़े ही सिखलाते हैं। नहीं। वो फिर ज्ञान देते हैं। कौन–सा ज्ञान देते हैं? बस, ये अक्षर नहीं याद है तुमको? कहते हैं– मन्मनाभव यानी मामेकम् याद करो, तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जावे। और कोई भी पतित से पावन बनाने का रास्ता नहीं। ये तुम गंगा में स्नान करते हो, फलाना करते हो...। वो बाप हमको समझाते हैं ये सब दुर्गति का रास्ता है। ये पाते आते हो जन्म–जन्मांतर। पीछे भक्ति का उनको धूर क्या, गंगा थोड़े ही पतित–पावनी है! पतित–पावन भगवान है। तुम जा करके गंगा में स्नान करते हो। गुरु भी तुमको उसमें ही स्नान कराते हैं। तो वो भी पतित, वो भी पतित, सब पतित ही हैं, जो घड़ी–2 स्नान करते रहते हैं और तुम गाते भी हो कि पतित–पावन एक, सद्गति दाता एक और बरोबर पुरानी दुनिया जो पतित हो गई है, वो है ही तमोगुणी दुनिया। सब पतित हैं। वास्तव में सभी पतित दुनिया के रहने वाले हैं। पतित दुनिया को नर्क भी कहा जाता है। तो सभी नर्कवासी हैं। नई दुनिया में रहने वाले स्वर्गवासी; पुरानी दुनिया में रहने वाले सब नर्कवासी। फिर साधु–संत–महात्मा सब (...)। तब तो बाप कहते हैं ना– साधु जिनका नाम है, मैं उनका भी उद्धार करने आता हूँ। बस, पीछे बाकी क्या! साधु के पीछे बाकी हैं सभी फॉलोअर्स। वो हैं पतित, जो वो समझते हैं कि साधु लोग हमको (...)। पर मैं कहता हूँ– मैं साधुओं का भी उद्धार करने आता हूँ। क्यों, लिखा हुआ नहीं है क्या? मैंने आगे नहीं कहा है, लिखा नहीं है कि साधु नाम जिनका है, उनका भी मैं (...), जो रूहानी बाप हूँ, स्प्रिचुअल फादर हूँ? तो स्प्रिचुअल फादर हूँ, रूहानी बाप हूँ, तो रूहानी नॉलेज देंगे ना यानी रूहों को नॉलेज देंगे। रूह रूहों को देते हैं। कैसे देवे? ये भी शरीर आकर धारण करते हैं। तुमको तो शरीर अपना है ही। तो ये तो समझा ना बच्ची। कोई भी जब कोई बात करते हैं, बुलाते हैं ये अपनी सभाओं में, तो वहाँ भी ऐसे ही (...), जाना है ज़रूर; परन्तु उनको ये फर्क समझाना है कि तुम्हारी सब जो नॉलेज है, ये सभी है शास्त्र की नॉलेज। उसको कहा ही जाता है– फिलॉसाफी, भक्ति और हमको देते हैं रूहानी बाबा, भगवानुवाच्य– माम् एकम् याद करो। वो बैठ करके अपना परिचय भी देते हैं– मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुम परिचय देते हो कि हम सभी बाप हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है। सभी बाप ही बाप, वो पत्थर भी बाप है; क्योंकि उनमें भी विराजमान है।

तुम तो उल्टी सुनाते हो बिल्कुल ही। तुम उल्टी सुनाते हो; बाबा सुल्टी सुनाते हैं। बाबा एक ही बार सुल्टी सुनाते हैं, चढ़ती कला (...)। पीछे जब हमारी 21 जन्म चढ़ती कला, पीछे रावण की मत पर उल्टी कला, तो हम गिरते ही रहते हैं। समझा ना! सब गिरे हुए हैं, सभी पतित हैं। देखो, ये प्लैन में देखो दिखलाया ना, ये नर्कवासी हैं ना, सभी पतित हैं ना। ये तो कलहयुग है ना। तो ये तो नर्कवासी तो सभी हैं ना। स्वर्ग तो सतयुग को कहा जाता है। कलहयुग को क्या कहा जाता है? नर्क कहा जाता है ना। नर्क कहाँ, स्वर्ग कहाँ! स्वर्ग नई दुनिया को कहा जाता है, नर्क यहाँ है। यहाँ तो मनुष्य किसको सुख है तो बोलता है– जिसको सुख है वो स्वर्ग है। अरे पर, स्वर्ग कहा ही जाता है नई दुनिया को; नर्क कहा ही जाता है पुरानी दुनिया को। पीछे ऐसे कैसे कहेंगे– यहीं स्वर्ग है, यहीं नर्क है? यानी जिसके पास सुख है, धन बहुत है, वो स्वर्ग में है, जिनके पास धन नहीं है वो नर्क में हैं, ऐसे कैसे हो सकता है? स्वर्ग होता ही सतयुग में है। ये मनुष्य मूर्ख नहीं हैं, जो कोई मरते हैं तो बोलते हैं कि स्वर्गवासी हुआ, वैकुण्ठवासी हुआ! अभी स्वर्ग होता ही सतयुग में, यहाँ कहाँ आया स्वर्ग! इतनी भी मत नहीं है। तो इसलिए हम कैसे मनुष्यों से बात सुनें! हम सुनते ही हैं बाप से। वो बाप कहते हैं, मानो न मानो, वो बाप कहते हैं कि तुम सब पतित बन गए हो बिल्कुल ही, आत्मा तुम्हारी तमोप्रधान बन गई है। अगर सतोप्रधान बनना है तो माम् एकम् याद करो, अपने बाप को याद करो, जिसके बच्चे हो। जहाँ से तुम आए हो, वहाँ जाने को चाहते हो, मुक्तिधाम में। वहाँ तो पतित आत्मा तो जा नहीं सकती है। पावन के लिए तुम शिवबाबा को याद करो, बाप को याद करो, तो तुम्हारा ये जो पाप है ना, वो सब जलकर भस्म हो जाएगा। इसको कहा जाता है–योगाग्नि। अरे, ये वही प्राचीन योग जो भारत का कहते हैं, वो फिर से रिपीट कर रहे हैं। तो ये सारा नॉलेज बच्चों को बुद्धि में अच्छी तरह से होवे ना। अब बच्चे बहुत भूल जाते हैं। पीछे जो आते हैं सो इस समय में कोई–न–कोई से वातावरण करनी शुरू कर देते हैं। तो नहीं, तुमको शांत से अपना जा करके बताना है। कोई भी उठ करके, जैसे अहमदाबाद से समाचार आया कि आर्य समाजी ने उठ करके (...)। अभी वो तो तुम जानते हो, ये सब तुम्हारे दुश्मन हैं। समझा ना! क्यों? मनुष्य की कोई भी वेद,ग्रंथ,शास्त्र तुम नहीं मानते हो, तुम सिर्फ एक को मानते हो। एक को तो सिर्फ तुम मानते हो। बाकी तो सब तुम्हारे दुश्मन हो जाते हैं। वो बैठ करके भक्तिमार्ग के (...), वो बोलेंगे– ये भक्ति नहीं करते, ये नास्तिक हैं। हम कहते– ये भगत नास्तिक हैं; क्योंकि बाप को नहीं जानते हैं। तो .. नास्तिक, जो बाप को नहीं जानते हैं ..., हम उनसे बात ही क्यों करें! नास्तिक, जो निधनके हैं, धक्का खाते रहते हैं। इसलिए हमको कोई भी बात नहीं करनी होती है। हम तो अभी आस्तिक बने हैं। हम बाप को जानते हैं और सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का राज़ हम जानते हैं, जो समझाते हैं। ये लो, देखो चित्र रखे हैं। इनसे हम ज्ञान समझाते हैं। चलो तो उनमें बैठ करके समझो। बाकी हमको कुछ समझने का नहीं है। तुम लोग को समझने का है तो तुम हम ब्रह्माकुमार–कुमारियों से सुन सकते हो। हमको कुछ भी समझने का नहीं है; क्योंकि हमको जब बाप मिला, सागर का, तो बाकी ये जो हैं पतित, उनके पास जाने से क्या मिलेगा! जो खुद ही पतित हैं और गंगा में स्नान करते हैं, पतित–पावनी गंगा को कहते हैं, हम उनके पास जाकर क्या करें, जिनको ये भी अक्ल नहीं है कि गंगा कैसे पतित–पावनी हो सकती है! जब पतित–पावन एक ही है, सर्व का सद्गति दाता। कहाँ वो मालिक, कहाँ ये तत्व, पानी का तत्व, उनको पतित–पावनी कहना या भगवान कहना, यह कहाँ की बात है? तो ऐसे मजबूत होना चाहिए बच्चों को बुद्धि में; परन्तु ये नॉलेज बुद्धि में भी कोई के मजबूत रहे ना। बच्चों को तो बहुत खबरदार रहना है समझाने के लिए। बस, यही

एक बात कि बाबा आकर कहते हैं। चित्र भी समझाना है 84 का पूरी होती है, अभी वापस जाने का है, बाप को याद करने का। अब भक्ति मुर्दाबाद होती है; ज्ञान जिंदाबाद। बाप आ करके (...) मुझे याद करो, वापस आना है सबको। समझा ना! भारत का 84 जन्म पूरा हुआ तो सबका जन्म पूरा हुआ। फिर भारतवासी 84 जन्म पूरा हो कहाँ जाएँगे? उनको तो वापस जाना है ना। तो ज़रूर सबका जन्म पूरा हो जाते हैं। फिर कोई का 80,84,85, ये सभी। फर्क बता देते हैं .., कहो हम सुनते ही हैं (...), हम कोई भी मनुष्य का बनाया हुआ ज्ञान (...)। शास्त्र मनुष्यों का बनाया हुआ है ना। तुम जो कहते हो कि व्यास ने बनाया है, हम नहीं मानते हैं। तुम बोलते हो कि गीता व्यास ने सुनाई, बनाया है किताब और कृष्ण ने सुनाया। अभी बच्चा, ये तो भला ख्याल करो, सुनाई कब, किसने, किसको? वो बनाई कब और कैसे बना सकते हैं, वहाँ मनुष्य नहीं हो सकते हैं! कि ऐसे तो नहीं है कि उस समय में बैठ करके बनाई। वो तो पीछे बनाई। वो तो खतम हो गई ना। पीछे तो सतयुग में तो कोई शास्त्र होता ही नहीं है; क्योंकि ये भक्तिमार्ग होता ही यहाँ है। सतयुग में कोई भक्तिमार्ग थोड़े ही होता है। तो ये बस, ये भक्तिमार्ग पूरा होता है, खतम होता है अभी। तो उन बिचारों को ये मालूम नहीं ना। वही वो वण्डर खाते हैं कलहयुग में .....भगवान आ करके; परन्तु ये जो कहते हैं ना, कल्प पड़ा है; इसीलिए इनकी बुद्धि में नहीं बैठता है। इसलिए ही कहा गया है कि कुम्भकर्ण के नींद में सोए पड़े हैं। किसने सुलाया है? ये मनुष्यों के बनाए हुए शास्त्रों ने। तो कह देना है कि हम कोई भी मनुष्य की बात ही बनाई हुई, शास्त्र वगैरह, मैं नहीं मानते हैं, हम लोग नहीं मानते हैं। हमको सुनाने वाला अभी ज्ञान सागर, परमपिता परमात्मा है, जो रचता है और रचना के आदि–मध्य–अंत की नॉलेज देते हैं और वही सद्गति करते हैं। मनुष्य मनुष्य की सद्गति नहीं कर सकते हैं, न शास्त्र किसकी सद्गति कर सकते हैं। सद्गति दाता एक ही है। शिव भगवान समझाय रहे हैं ब्रह्मा के तन से। बस, पीछे तो सिद्ध है तुम ब्रह्माकुमारियाँ तो हो ही। तो ऊपर में भी लिख देना चाहिए कि शिव भगवान ब्रह्मा के तन से (...), पतित–पावन, उसकी महिमा लिख करके– ज्ञान सागर, सर्व का पतित–पावन, सर्व का सद्गति दाता, गीता ज्ञान दाता शिव परमात्मा। वो तो ज़रूर लिखा हुआ होवे। समझा ना! तो फिर तुम छूटी। हमको शिवबाबा समझाते हैं। देखो, लिखा नहीं है! वो .... जादूगर यानी पत्थर बुद्धि को पारस बनाना। वो ... जादूगरी कर रहे हैं ना बच्ची। वो ले करके काला पत्थर, उनको सोने का रंग चढ़ाय करके, ठग करके जाते हैं। .....ये तो आत्मा जो बिल्कुल तमो(प्रधान) उन आत्मा को बैठ करके वो एकदम पाउण्ड बनाते हैं और विश्व का मालिक बनाते हैं। अभी क्या कमाल है! तुम लोग को तो बहुत खुशी होनी चाहिए; परन्तु याद न करने से खुशी नहीं होती है तुमको।

(अधूरी मुरली)